सदुपयोग किया जाय तो हमारा सम्पूर्ण जीवन शुद्ध हो जायगा और अन्त में उस परम लक्ष्य की प्राप्ति हो जायगी, जो इस प्राकृत आकाश से परे है।

उस लक्ष्य को 'सनातन धाम' अथवा 'शाश्वत् परव्योम' कहा जाता है। हम देखते हैं कि प्राकृत-जगत् में सब कुछ अनित्य और क्षणभंगुर है। यह जन्म लेता है, बढ़ता है, कुछ समय तक विद्यमान रहता है, कुछ उपसृजन करता है, क्षय होता है और अन्त में लुप्त हो जाता है। इस संसार का यही नियम है, चाहे हम अपने शरीर का उदाहरण लें, चाहे फल का अथवा किसी अन्य पदार्थ का। किन्तु एक अन्य लोक की जानकारी भी हमें है, जो इस जगत् से परे है। वह लोक एक अन्य प्रकृति से बना है, जो 'सनातन' अर्थात् नित्य है। पन्द्रहवें अध्याय में जीव को सनातन कहा गया है, श्रीभगवान् तो सनातन हैं ही। श्रीभगवान् से हमारा नित्यसिद्ध अन्तरंग सम्बन्ध है तथा चिद्गुणों में हम सब एक हैं—वह धाम सनातन है, श्रीभगवान् सनातन हैं तथा जीव भी सनातन है। अतएव जीव में उसके सनातन धर्म को पुनः जागृत करना ही सम्पूर्ण भगवद्गीता का ऐकान्तिक लक्ष्य है। इस समय हम क्षणिक रूप से विविध प्रकार के कर्मों में संलग्न हैं; किन्तु क्षणभंगुर क्रियाओं को त्याग कर श्रीभगवान् द्वारा निर्दिष्ट क्रिया करने से इन सभी कर्मों का परिशोधन हो जायगा। वस्तुतः वही हमारा शुद्ध जीवन है।

श्रीभगवान्, उनका दिव्य धाम और जीव—ये सब सनातन हैं तथा सनातन धाम में श्रीभगवान् और जीव का संग मानव जीवन की परम सार्थकता है। श्रीभगवान् अपने जीव-पुत्रों पर अशेष कृपा का परिवर्षण करते रहते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा हैं, **'सर्वयोनिषु'.. 'अहं बीजप्रदः पिता'**, 'मैं सबका पिता हूँ। जीवों को कर्मानुसार विविध योनियों की प्राप्ति होती है। पर यहाँ श्रीभगवान् का उद्घोष है कि वे उन सब के पिता हैं। अतः इन सभी पतित, बद्ध जीवों के उद्धार के लिए अवतरित हो कर वे सनातन धाम की ओर उनका आह्वान करते हैं, जिससे उनके सनातन संग में वे सनातन जीव अपने सनातन स्वरूप को प्राप्त हो जाएँ। श्रीभगवान् स्वयं नाना अवतार लेते हैं अथवा बद्ध जीवों का उद्धार करने के लिए अपने अन्तरंग सेवकों को पुत्ररूप में भेजते हैं अथवा पार्षदों और आचार्यों को भेजते हैं।

वास्तव में 'सानतन धर्म' का तात्पर्य किसी साम्प्रदायिक पद्धति अथवा मत-मतान्तर से नहीं है। वह तो श्रीभगवान् से सम्बन्धित है और सनातन जीव का स्वरूपभूत सनातन कर्तव्य है। श्रीमद्रामानुजाचार्य के अनुसार 'सनातन' उसे कहते हैं जिसका आदि-अंत न हो। श्रील रामानुजाचार्य के प्रमाण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'सनातन धर्म' का आदि-अन्त नहीं है।

अंग्रेजी शब्द 'रिलिजन' का अर्थ 'सनातन धर्म' से भिन्न है। 'रिलिजन' का अर्थ विश्वास समझा जाता है और विश्वास बदल सकता है। जिस भी पद्धति में मनुष्य का विश्वास हो, उसे त्याग कर किसी अन्य पद्धति को अंगीकार कर लेने में वह स्वतन्त्र है। 'सनातन धर्म' तो यथार्थ में वह क्रिया है, जिसे बदला ही नहीं जा